ध्यान जीवन

ध्यान, स्वाध्याय तथा सज्जन संगति के द्वारा हमें अवश्य आत्मज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इसी जन्म को अन्तिम बनाने के लिए निश्चय ही इनकी आवश्यकता है। भौतिक रूप से हम कुछ भी प्राप्त कर लें, वे सब प्राप्तियाँ अशाश्वत ह अतः शाश्वत सच को पाने के लिए बेचैन होना चाहिए तथा परिश्रम करके उसे पाना भी चाहिए।

निश्चय ही हमें अपने इस जन्म को आखिरी जन्म बनाना चाहिए नहीं तो फिर जन्मलेकर, फिर मर कर हम पहले ही अपने अनेक जन्म व्यर्थ कर चुके हैं, आगे ऐसा न हो, इस दृढ़ संकल्प से इस पल से ही ध्यान जीवन को जीना शुरु करें।